eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

रामकृष्ण मिशन : स्थापना एवं विस्तार

ऐश्वर्या सिंह[1], आकांक्षा सिंह[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Received: 15 April 2025 Accepted & Reviewed: 25 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

श्रीरामकृष्ण परमहंस के प्रमुख अनुयायी स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन मुख्य रूप से अद्वैत वेदांत, एक हिंदू दर्शन, साथ ही चार योगिक आदशों ज्ञान, भक्ति, कर्म और राज योग को बढ़ावा देता है। "आत्मानों मोक्षार्थं जगद् हिताय च", स्वयं के उद्धार के लिए तथा विश्व के कल्याण के लिए, आदर्श वाक्य के साथ रामकृष्ण मिशन एवं रामकृष्ण मठ की स्थापना की गई थी। इस आदर्श वाक्य को तैयार करने का श्रेय स्वामी विवेकानंद को जाता है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत रामकृष्ण मिशन के उद्धव एवं उसके विस्तार की गहन चर्चा की गई है, जिसके अंतर्गत यह बताया गया है कि रामकृष्ण मिशन की स्थापना के आधार क्या थे एवं किस प्रकार रामकृष्ण मिशन का विस्तार तीन कालखंडों में हुआ है। रामकृष्ण मिशन के विकास में स्वामी विवेकानंद के अतिरिक्त श्रीरामकृष्ण परमहंस के अन्य अनुयायियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग करते हुए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों के माध्यम से किया गया है।

मुख्य शब्द– रामकृष्ण मिशन, उद्भव, विस्तार।

Introduction

मनुष्य में गरिमा और सतर्कता का भाव रहना चाहिए। जिसकी आध्यात्मिक चेतना जागृत हो चुकी है, केवल उसी में गरिमा और सतर्कता रहती है और उसे ही मनुष्य की संज्ञा दी जा सकती है। (श्रीरामकृष्ण वेदांत के आलोक में) रामकृष्ण संघ शब्द दो बातों का द्योतक है– संस्था और भावधारा। यह रामकृष्ण संघ के इतिहास से कहीं अधिक इसके उन विचारों और आदर्शों से संबंधित है जो आंदोलन के प्रवर्तकों और उनके अनुयायियों को प्रेरित और उत्प्राणित कर रहें हैं। इतिहास में आंदोलन के वाह्य पक्ष को देखा जाता है जबकि भावधारा का संबंध उन विचारों और आदर्शों से होता है जिन्हें व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में साकार करने का प्रयास किया जाता है इस प्रकार रामकृष्ण संघ शाश्वत सत्य और शक्ति का वह उन्मीलन है जो मनुष्यों और संस्थाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। (रामकृष्ण मिशन उद्गम और उद्भव पृ. 97)

एक समय कण्ठ रोग से पीड़ित होने के पश्चात श्री रामकृष्ण काशीपुर उद्यान में रोग का उपचार कर रहे थे, वहां पर उन्होंने सभी युवकों को संन्यास की दीक्षा दी और उनसे प्रेम के साथ संगबाड़ होने को कहा इस संघ का मुखिया उन्होंने नरेंद्र को बनाया रामकृष्ण संघ के उद्गम को उनकी करुण पुकार में भी देखा जा सकता है जब श्री रामकृष्ण अपनी समस्त आध्यात्मिक साधनाओं को पूर्ण करने के पश्चात दक्षिणेश्वर के एक मकान की छत पर चढ़कर प्रकट करते थे, कहाँ हो रे, तुम लोग, जहाँ कहीं भी तुम हो, आ जाओ, तुम्हारे लिए मैं व्याकुल हो रहा हूँ। (रामकृष्ण मिशन उद्गम और उद्भव पृ. 97)

श्रीरामकृष्ण जी महान समाधि के पश्चात नरेंद्र एक खंडहर मकान में रहने लगे। उन्होंने श्रीरामकृष्ण की विरासत को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी ली। इसके बाद लोग उन्हें स्वामी विवेकानंद के नाम से जानने लगे। स्वामी जी जिस खंडहर मकान में रहते थे वह कोलकाता की वराह नगर में स्थित था यह रामकृष्ण संघ का पहला मठ हुआ। 06 साल के पश्चात मठ को आलम बाजार में स्थानांतरित कर दिया गया। इसके पश्चात नीलांबर मुखर्जी के उद्यान भवन में और अंत में 1898 में बेलूर में स्थाई रूप से स्थानांतरित कर दिया गया। 1899 में मठ का पंजीकरण हुआ। बेलूर मठ आज रामकृष्ण मठ के सन्यासी, न्यासियों के द्वारा संचालित किया जा रहा है तथा विश्व भर में इसकी शाखाएं तथा उप–शाखाएं फैली हुई हैं। रामकृष्ण मठ को पूरे विश्व में एक अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक, सांस्कृतिक संगठन के रूप में जाना जाता है।

रामकृष्ण मठ के समानांतर ही रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1 मई 1897 ईस्वी में की गई, जिसका उद्देश्य भी रामकृष्ण मठ के समान ही है किंतु उसके द्वारा सेवा कार्य भी किए जाते हैं। दोनों का संगठनात्मक स्वरूप और प्रशासन संन्यासियों के ही हाथों में होने के कारण दोनों में कोई अंतर नहीं है। सामान्यतः दोनों को समाज में रामकृष्ण मिशन के नाम से जाना जाता है। रामकृष्ण मिशन का पंजीयन 1909 ईस्वी में हुआ थाय परंतु अब इसका प्रशासन भी रामकृष्ण मठ के द्वारा ही किया जाता है। पूरे विश्व में रामकृष्ण संघ के दीक्षित भक्त भी हैं जो यथासंभव सेवा कार्यों में संलग्न है।

रामकृष्ण मिशन के उद्गम का वैचारिक आधार– श्रीरामकृष्ण परमहंस के आह्वान एवं उनके विचारों से प्रेरित होकर जितने भी युवक उनके पास आए उन्होंने उन्हें केवल एक संत भर ही समझा, जिसके द्वारा वे व्यैक्तिक मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते थे, किंतु यह स्वामी विवेकानंद जी की ही प्रतिभा थी जिन्होंने श्रीरामकृष्ण परमहंस को वैश्विक संदर्भ में समझकर उन्हें एक अवतार के रूप में घोषित किया। उन्होंने कहा सभी धर्म सत्य और ईश्वर प्राप्ति के प्रामाणिक पथ हैं। उनका सूत्र था जितने मत उतने पथ। स्वामी विवेकानंद ने यह भी कहा कि आधुनिक समय में धर्म और शास्त्रों को श्रीरामकृष्ण के आलोक में ही ठीक समझा जा सकता है।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानंद ने की थी अतः मिशन और उसके समस्त गतिविधियां विवेकानंद की तीन प्रकार की अंतर्दृष्टि पर आधारित है–

स्वामी जी की पहली अंतर्दृष्टि यह थी कि श्रीरामकृष्ण न केवल भारत के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण व्यक्तित्व है। उन्होंने हमें एक नूतन जीवन दृष्टि प्रदान की जिसके अनुसार मानवता अपने जीवन पद्धति को बदलकर एक विश्व व्यापी आध्यात्मिक सभ्यता और समाज व्यवस्था का निर्माण कर सकती हैं। ऐन्द्रिक तुष्टि और दूसरों पर नियंत्रण की आकांक्षाओं को नियंत्रित और संयमित कर आध्यात्मिक पूर्णता का पथ प्रशस्त किया जा सकता है तथा समता, स्वतंत्रता और विश्वबंधुत्व के आदर्श को जीवन में साकार किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद का दृढ़ विश्वास था कि श्रीरामकृष्ण के जीवन और संदेश को केंद्र बनाकर भारत एक प्रचण्ड आध्यात्मिक ऊर्जा और महाशक्ति के रूप में उभरेगा जो समस्त मानव जाति को रूपांतरित कर देगा।

स्वामी जी की दूसरी अंतर्दृष्टि यह थी कि भारत के अधः पतन का कारण हिंदू धर्म नहीं अपितु जीवन में उसके सही प्रयोग का अभाव है। स्वामी जी ने कहा कि भारत के अधोगति का कारण भारत के जन सामान्य की निपट गरीबी और निरक्षरता है। स्वामी जी से पूर्व के सुधारक भारत के सामाजिक जीवन में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

व्याप्त सभी बुराइयों को हिंदू धर्म की उपज मानते थे किंतु स्वामी जी ने कहा कि यह बड़े ही आश्चर्य की बात है कि इतनी छोटी सी बात भारत का एक भी समाज सुधारक नहीं समझ पाया कि जनसाधारण की उपेक्षा तथा नारी जाति के साथ उपेक्षित व्यवहार भी एक प्रमुख कारण है। भारत की जनता और नारी की दरिद्रता और निरक्षरता को दूर करके ही भारत पुनरुत्थान के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

स्वामी जी की तीसरी अंतर्दृष्टि विश्व संस्कृति को भारत के योगदान से संबंधित थी। स्वामी जी का यह मानना था कि धर्म यद्यपि हर सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है और मानव स्वभाव की आवश्यकता है। इस कारण धर्म एक सार्वभौमिक घटना है। भारत में वेदांत की परंपरा रही है जिसकी अपनी एक विशेषता है। हिंदू धर्म उतना ही सार्वभौमिक है जितना की आधुनिक भौतिक विज्ञान। स्वामी जी का यह मानना था कि भारत के उपनिषदों में ही धर्म के शाश्वत तत्वों जैसे, अंतिम समय का स्वरूप (ब्रह्म), आत्मा का स्वरूप और ईश्वर के साथ उसका संबंध, मानव जीवन की अंतिम नियति, परलोक, पुनर्जन्म, ईश्वर की अनुमति, सृष्टि की उत्पत्ति, आत्मानुभूति के विभिन्न मार्ग, जिन्हें हम योग की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार भारतीय वेदांतवादी धर्म कहीं से भी और अवैज्ञानिक नहीं है। वेदांत विज्ञान का विरोध नहीं करता बल्कि आधुनिक विज्ञान की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। बिना वेदांत के विज्ञान विध्वंसकारी रूप ले सकता है। इस प्रकार सनातन धर्म किसी अन्य धर्म का विरोधी नहीं है।(रामकृष्ण मिशन उद्गम और उद्भव पृ.100)

जिस समय संपूर्ण विश्व में यह मान्यता व्याप्त थी कि भारत एक पिछड़ा हुआ देश है, उस समय स्वामी विवेकानंद की घोषणा कि आध्यात्मिक दृष्टि से भारत आज भी अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक उन्नत है और विश्व संस्कृति को बहुत कुछ दे सकता है, यह एक बहुत बड़ा दावा था। इस घोषणा से भारत में बहुत बड़ी जागृति आई थी। स्वामी विवेकानंद के पश्चिम में दिए गए व्याख्यानों के कारण भारत और भारतीय संस्कृति के प्रति बहुत वैश्विक दृष्टि में बड़ा परिवर्तन आया था।

स्वामी विवेकानंद के ये तीन अंतर्दर्शन ही रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन इन दो युग्म संस्थानों के वास्तविक आधार है। स्वामी जी का सपना ही हिंदू संस्थाओं के माध्यम से साकार हुआ है। स्वामी विवेकानंद के ये तीन अंतर्दर्शन ही मठ और मिशन के आध्यात्मिकता, समाजकल्याण और धर्म प्रचार के रूप में सामने आए हैं।

1. आध्यात्मिकता : रामकृष्ण मठ एवं मिशन का प्रमुख कार्य क्षेत्र–

रामकृष्ण मठ का प्रमुख कार्य क्षेत्र आध्यात्मिकता है स्वामी विवेकानंद ने श्री रामकृष्ण परमहंस को अवतार कहा था । अवतार का प्रमुख प्रयोजन मानवता को दुखों और कष्टों तथा संसार के क्लेशों से मुक्त करना है । यह सतत् चलते रहने वाला कार्य है । अवतार की मूल शक्ति और उसके रहस्यात्मक ज्ञान को गुरु परंपरा द्वारा दीक्षा के माध्यम से संचारित किया जाता है। इस दृष्टि से रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की सभी गतिविधियाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इसी कार्य से जुड़ी हुई है,जो कि निम्नलिखित है –

- आध्यात्मिक जागरण का विस्तार
- राष्ट्र के आध्यात्मिक ओज को सुरक्षित रखना
- आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं सम्मति
- अधोगामी शक्तियों का प्रतिकार

- हिंदू धर्म का एकीकरण
- धर्म समन्वय
- राष्ट्रीय एकता
- संन्यास आश्रम का पुनरुत्थान
- प्रबुद्ध समुदाय का निर्माण

2. समाज कल्याण : रामकृष्ण मिशन का प्रमुख कार्य क्षेत्र– रामकृष्ण मिशन एवं मठ की सभी शाखाएं समाज कल्याण के क्षेत्र में काम करती हैं। दोनों संगठनों का उद्देश्य एक ही है– आत्मनो मोक्षर्थं जगद्धिताय च– स्वयं की मुक्ति के लिए और जगत् के हित के लिए। दोनों संगठनों द्वारा किए जाने वाले कार्य स्वामी विवेकानंद के समाज दर्शन के दो मुख्य सिद्धांतों पर आधारित है। पहला सिद्धांत यह है कि लौकिक और पारमार्थिक कार्य में कोई अंतर नहीं है– सब कार्य पारमार्थिक और पवित्र है। दूसरा सिद्धांत है नर सेवा नारायण की सेवा ही है। स्वामी विवेकानंद ने सामाजिक कार्य को भी आध्यात्मिक से जोड़ दिया था। इस दृष्टि ने ही रामकृष्ण मिशन को अनेक प्रकार की सामाजिक गतिविधियों को हाथ में लेने के लिए प्रेरित किया और इसके साथ ही रामकृष्ण मिशन ने अपने आध्यात्मिक पहचान भी बनाए रखी है।

3. रामकृष्ण मिशन द्वारा सेवा कार्य– रामकृष्ण मठ एवं मिशन द्वारा सेवा कार्यों का भी संचालन किया जाता है, जिसको दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है– अस्थायी सेवाएं और स्थाई सेवाएं।

अस्थाई सेवाओं के अंतर्गत वे कार्य आते हैं जो प्राकृतिक विपदाओं से उत्पन्न होते हैं जैसे भूकंप, तूफान, बाढ़, सूखा इत्यादि। अस्थाई प्रकार की अन्य सेवाओं में प्याऊ लगाना, कम लागत वाले आवास गृह बनवाना, कम लागत के शौचालयों का निर्माण। जब अस्थायी सेवाओं का लक्ष्य पूरा हो जाता है तो इन्हें बंद कर दिया जाता है। स्थायी सेवाओं के अंतर्गत शैक्षणिक संस्थाएं, चिकित्सकीय संस्थाएं, ग्राम्य विकास केंद्र, बाल कल्याण केंद्र, युवा कल्याण केंद्र, सांस्कृतिक केंद्र आदि आते हैं। इन संस्थानों के माध्यम से लाखों की संख्या में लोग प्रतिवर्ष लाभान्वित होते हैं। इन कार्यों के द्वारा ही रामकृष्ण मिशन भारत में घर–घर लोकप्रिय संगठन के रूप में अपनी पहचान बन चुका है।

रामकृष्ण मिशन के कालखण्ड– सन 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना के पश्चात संवैधानिक रूप से रामकृष्ण मिशन का पंजीयन 1909 में हुआ था परंतु इसका कार्य 1886 से ही श्री रामकृष्ण की महासमाधि के पश्चात ही प्रारंभ हो चुका था। स्वामी विवेकानंद के विदेश से लौटने के बाद 1895 में मठ वराहनगर और आलम बाजार से स्थानांतरित होकर बेलूर में आ चुका था। लगभग 125 वर्ष के कालखण्ड को इसके विकास के चार खण्डों में बांटा जा सकता है–

प्रथम कालखंड (1897 से 1947)– 1897 में भारत पराधीन था 1947 में भारत ने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त किया। इसे रामकृष्ण मिशन का प्रारंभिक कालखण्ड कहा जा सकता है। इस कालखण्ड में रामकृष्ण मिशन के पास भौतिक संसाधन अत्यंत सीमित थे तथा इसे किसी भी प्रकार की बाहरी सहायता प्राप्त नहीं होती थी, जिससे इसका विकास बहुत तीव्र गति से नहीं हो पाया था। इस कालखण्ड में रामकृष्ण मिशन का प्रमुख बल गरीबों और दलितों की सेवा करने की ओर ही था।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

द्वितीय कालखंड (1947 से 1997)— भारत की स्वतंत्रता की पश्चात देश में बहुत बड़ा परिवर्तन आया। लोकतंत्र प्रणाली के लागू होते ही लोकहितकारी— राज्य की एक नूतन अवधारणा का जन्म हुआ जिसके अनुसार जनता की सुख— समृद्धि सरकार का दायित्व हो गया। स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार के पास व्यवस्थाएं अत्यंत न्यूनतम थी और इस कारण उसे स्व— प्रेरित संगठनों पर निर्भर रहना पड़ा। किंतु इस कालखण्ड में शासन की तरफ से रामकृष्ण मिशन को प्रचुर सहायता प्राप्त हुई। किंतु शासन पर निर्भरता के कारण रामकृष्ण मिशन पर शासकीय हस्तक्षेप प्रारंभ हो गया जिससे मिशन की स्वतंत्रता छीन गई। शासन के द्वारा ही सामुदायिक विकास की योजनाएं प्रारंभ किए जाने लगे।

इस कारण गैर सरकारी संगठनों का कार्य क्षेत्र सीमित हो गया। इस अवधि में दो प्रमुख बातें ध्यान देने योग्य है— पहली कि उस समय रामकृष्ण मिशन जैसे सेवा संगठन थे ही नहीं और अब इनकी संख्या बहुत अधिक हो गई है। दूसरी बात यह कि अब मध्यम वर्ग सामने आ गया, अब तक भारत में धनी और गरीब दो ही श्रेणियां थी परंतु मध्यम वर्ग के आगे आ जाने से शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में उन्होंने भी अपना हाथ बटाया। द्वितीय कालखंड में रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन के कार्य में परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार की वृद्धि हुई।

तृतीय कालखंड (1997 से 2022) — रामकृष्ण मिशन की शताब्दी 1997 में मनाई गई। शताब्दी को मनाने के उपरांत भी 125 वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस अवधि में भारत अब एक नूतन सामाजिक, आर्थिक क्रांति को देख रहा है। भारत अब पिछड़ा या विकासशील देश नहीं रहा। भारत का नाम पूरे विश्व में सम्मान के साथ लिया जाने लगा है। भारत की इस स्थिति में तीन कारक अपनी प्रमुख भूमिका निभाते हैं— वैश्वीकरण, मुक्त बाजार की आर्थिकी की विजय तथा इलेक्ट्रॉनिक क्रांति। इन तीनों कारकों के कारण परिवर्तन का दोलक अब विपरीत दिशा में घूमने लगा है।

यद्यपि लोकहितकारी राज्य की अवधारणा आज भी प्रासंगिक है, परंतु उत्पादन क्षेत्र और सेवा के क्षेत्र में तो निजीकरण प्रायोगिक स्तर पर आ गया है। वर्तमान में रामकृष्ण मिशन पूरे देश में बहुत बड़ी संख्या में शिक्षा संस्थानों का संचालन कर रहा है। अतः निजीकरण तथा स्वायत्तता की दूरगामी परिणाम रामकृष्ण मिशन को होना अवश्यभावी है। वर्तमान समय में चीन और अमेरिका जैसे समृद्धशाली देश में समृद्ध उच्च वर्ग का बोलबाला बढ़ता जा रहा है इस कारण अन्य देशों में भी इसका प्रभाव देखा जा रहा है। भारत को अभी भी अपने निम्न वर्ग के स्तर को उठाने में काफी वक्त लगेगा परंतु मध्यम वर्ग पर उसका प्रभाव देखा जा रहा है। इस कारण रामकृष्ण मिशन को अपने कार्य सूची में इन प्रभावों को वरीयता देनी होगी।

रामकृष्ण मिशन का विस्तार और प्रचार— रामकृष्ण मिशन के विस्तार और प्रचार में विवेकानंद के अंतर्दर्शनों का महत्वपूर्ण स्थान है। विवेकानंद का पहला अंतर्दर्शन था— श्रीरामकृष्ण के अवतारत्व की समझ और स्वीकृति तथा दूसरा अंतर्दर्शन भारत के पुनरुत्थान से संबंधित है। रामकृष्ण मिशन अभी तक प्रमुख रूप से दो अंतर्दर्शनों के लिए ही कार्य करता आ रहा है। स्वामी विवेकानंद का तीसरा अंतर्दर्शन विश्व को भारत के योगदान से संबंधित है। इसकी पूर्ति के लिए कार्य के विस्तार की आवश्यकता है। परंतु इसके पहले विस्तार और प्रचार में अंतर करना आवश्यक है। प्रचार में संख्या बढ़ाने पर बल दिया जाता है जबकि प्रसार में भाव और आदर्श को आगे बढ़ाया जाता है। प्रचार में धर्म परिवर्तन किया जाता है जबकि प्रसार में प्रेरित करने पर बल दिया जाता है प्रचार में संकीर्णता होती है जबकि प्रसार में उदारता होती है।

उपसंहार– स्वामी विवेकानंद द्वारा 1897 में स्थापित रामकृष्ण मिशन श्रीरामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं से प्रेरित एक प्रसिद्ध धार्मिक और सामाजिक संगठन है। इसका महत्व मानवीय सेवा आध्यात्मिक विकास और अंतरधार्मिक सद्भाव के प्रति इसकी प्रतिबद्धता में निहित है, जो मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा है के आदर्श को मूर्ति रूप देता है। रामकृष्ण मिशन के विस्तार और प्रचार में विवेकानंद के अंतरदर्शनों का महत्वपूर्ण स्थान है। रामकृष्ण मिशन एक ऐसा संगठन है जिसका प्रमुख कार्य क्षेत्र आध्यात्मिकता से संबंधित है यह समाज कल्याण को भी आध्यात्मिकता के आलोक में करने का प्रयास करता है।

रामकृष्ण मिशन के द्वारा पूरे देश में सेवा कार्यों का संचालन किया जाता है। यह सेवा कार्य निशुल्क किया जाता है। रामकृष्ण मिशन का उद्भव एवं विकास तीन कालखंडों के अंदर वर्गीकृत किया गया है। इन तीनों कालखण्डों में विकास को निरंतर बनाए रखते हुए रामकृष्ण मिशन ने अपने वर्तमान स्थिति को प्राप्त किया है। रामकृष्ण मिशन के उद्भव और विकास में स्वामी विवेकानंद के अतिरिक्त श्री रामकृष्ण परमहंस के अन्य अंतरंग शिष्यों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जैसे– स्वामी ब्रह्मानंद, स्वामी प्रेमानंद, स्वामी तुरीयानंद, स्वामी शिवानंद, स्वामी अद्भुतानंद, स्वामी अभेदानंद, स्वामी रामकृष्णानंद, स्वामी अद्वैतानंद, स्वामी विज्ञानानंद, स्वामी अखंडानंद, स्वामी योगानंद, स्वामी निरजनानंद इत्यादि। इन सभी शिष्यों ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना एवं उसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

एस0 शिवकुमार. (2014), ए स्टडी ऑफ दि कॉन्ट्रीव्यूशन ऑफ श्रीरामकृष्ण मिशन
टुवर्ड एनारिचमेंट ऑफ सेकेन्ड्री एजूकेशन इन इंडिया सिन्स इट्स इन्सेप्सन अपटू 2005, शिक्षा विभाग मैसूर विश्वविद्यालय।

ओड़, लक्ष्मीकान्त. (2010), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठाभूमि, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

एन0सी0एफ0. (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।

सर्वभूतन्द, स्वामी. (2009), ग्रेट थिंकर्स ऑन रामकृष्णा– विवेकानन्द, रामकृष्ण मिशन इन्स्टीटयूट ऑफ कल्चर, कोलकाता इण्डिया।

द वेदान्ता केसरी. (2017), रामकृष्ण मिशन मठ, मिलापोर चेन्नई।

विवेकानन्द, स्वामी. (2015, अठारहवॉ पुनर्मुद्रण), ज्ञानयोग, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली नागपुर।

विवेकानन्द, स्वामी. (2014, सत्रहवॉ पुनर्मुद्रण), प्राच्य और पाश्चात्य, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली नागपुर।

निर्वेदानन्द, स्वामी. (2013, द्वितीय पुनर्मुद्रण), हमारी शिक्षा, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली नागपुर।

विवेकानन्द, स्वामी. (2016, षष्ठ पुनर्मुद्रण), शिक्षा का आदर्श, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली, नागपुर।

शर्मा, सुरेंद्रचंद्र. (2023),रामकृष्ण मिशन उद्गम और उद्भव, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली नागपुर।

तपस्यानंद, स्वामी. (2020), श्रीरामकृष्ण वेदांत के आलोक में, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली नागपुर।